प्रकाशनार्थ पुस्तक समीक्षा

छायावादी विचारों का संवाहक

डा० तारा सिह का काव्य संकलन है "सॉझ का सूरज"

" **सॉझ** का सूरज" यह नव प्रकाशित काव्य संकलन छायावादी कवयित्री डा० तारा सिह की कृति हैं । उससे पूर्व उनके सत्रह काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके है । यह उनका अट्ठारवॉ संकलन है । अपने पिता श्री और माता श्री की स्मृतियों को समर्पित इस संग्रह को सरस्वती वन्दना की इन पंक्तियों से शुरू किया गया है .....

" तन में नव स्फूर्ति दे मॉ
सॉसों में नई बयार दे
कादम्बिनी सुधा नीर बहा दे
नाव को कर पार दे
जय शारदे मॉ शारदे "

अपने को जग का बूढ़ा पथिक ' कहकर कवयित्री वृद्धावस्था की विवशता और शिथिलता का सजीव वर्णन कर रही हैं । जीवन की सन्ध्या वेला में सूरज के ढ़लते ताप की अनिवार्यता और पश्चिम दिशा की ओर अग्रसर उस दिनकर की दैनिक यात्रा की विवेचना है । स्वर्ण आकांक्षा में निशा के अंचल में बैठी कोई मनोदशा थकी हारी उदास होकर मेरे अन्त:करण में आकर बैठ जाती है । यह भाव हैं, संग्रह की एक विशिष्ट कविता के । कवयित्री ने पूछा है, उस अनजान परदेसी से जो पता नहीं कब आकर, बैठ गया था । नाग केसरों की क्यारी के माध्यम से शान्ति का आह्वान करती हुई भावना का अतिरेक है । प्रेम को बार बार पुकारने वाले प्रेमी को सम्बोधित कविता में पाप पुण्य, शान्ति, समता, अर्जन वर्जन सभी भावों की अभिव्यक्ति है । कवयित्री अपने बचपन को लौटाने का आग्रह कर चित्रकार को स्मृतियों की तूलिका की मॉग कर रही है ।

विधवा शीर्षक से लिखित कविता में प्रश्न सूचक दृष्टि में जानना चाहती है कि मन्दिर की दीपशिखा की भान्ति टूटी तरू की छूटी लता सी दीन, यह कौन देवी है । इसके अतिरिक्त समर विजय की आशा के प्रति आश्वस्त भावों का एक व्याकरण, काव्य के माध्यम से मुखरित हो रही है । यही कारण है कि अब जिन्दगी को अपने स्थान पर बैठे रहने का आग्रह कर रही है ।

धूल, धुंध में अग्निबीज बोने के भावों में बारूदी उन्माद का भाव मुखरित हो रहा है । वर्तमान आणविक अस्त्रों के सन्दर्भों को अलंकारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया दस्तावेज है । प्रेम के सम्बोधनों का सामूहिक उद्घोष आणविक अस्त्रों और कपट छल हिंसा स्पर्धा की होड़ का भी अभिव्यक्तिकरण है । इसी तरह जब अन्तस की भाषा मौन हो जाये और मन में समर विजय की कामना बनी रहे तो प्रश्नों की तारतम्यता निरन्तर बनी रहती है । उस समय जीवन को स्थिर होकर बैठने का आग्रह किया जाता है ।

कवयित्री ने विरह की ज्वाला में जलने की प्रक्रिया का वर्णन अत्यन्त नये अन्दाज में किया है। इसके आलावा जिन कविताओं में कवयित्री के छायावादी भावों के दर्शन किये जा सकते है उनमे "तीन काल मुझ में निहित, वह कौन है, प्राणाकांक्षा, मन तू हौले हौल डोल, हमविहग चिर क्षुद्र, आदि उल्लेखनीय हैं । मॉ की पुण्यतिथि पर लिखित कविता भी स्मृतियों को संजोने का प्रयास है । गंगा वट वृक्ष, वीर गाथा, और विजया-दशमी जैसी कवितायें संग्रह को समृद्ध कर रही हैं । इसी क्रम में कृष्णाष्टमी भी है । इस के अलावा, हे सारथि रोको अब इस रथ को में जीवन रथ को चलाने वाले परमेश्वर से विनम्र आग्रह है । वसन्त और होली के स्मरण की कवितायें महत्वपूर्ण हैं ।

क्या यही हमारा हिन्दोस्तान है । और श्री राम का मनुज देह में आना एक अत्यन्त विचारणीय विषयों पर आधारित कवितायें भी अपना विशेष महत्व रखती है। भगवान महावीर पर काव्य पुस्तिका का समापन अपने आप में चरम पर स्थापित अवधारणा है ।

डा० श्रीमती तारा सिंह का यह काव्य संकलन पठनीय तो है ही साहित्य के लिये भी एक उपलब्धि है । आवरण पृष्ठ भावपूर्ण है । छपाई सुन्दर और मूल्य भी उचित है ।

आलोच्य पुस्तक : " सॉझ का सूरज"
रचनाकार : डा० श्रीमती तारा सिंह
मूल्य : ६० रूपये मात्र
प्रकाशक : मीनाक्षी प्रकाशन शकरपुर, ३२/२बी, गली नं०-२, दिल्ली-९२
प्राप्ति स्थान : १५०२ (१५वॉ तला) सी, क्वीन हैरिटेज, पामबीच रोड,
प्लॉट-६, सैक्टर-१८ सानपाड़ा नवी मुम्बई - ४००७०५

समीक्षक
कृष्ण मित्र
कवि एवं पत्रकार
१०२, राकेश मार्ग, गाजियाबाद